विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – अष्टम **दिनांक -28- 12- 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक - पंकज कुमार**

सुप्रभात् बच्चों आज सदामा चरित के बारे में अध्ययन करेंगे।

। द्वारिका जाहु जू द्वारिका जाहु जू आठहुँ याम यहै रट तेरे।
जो न कहो करिए तो बड़ो दुख जइए कहाँ अपनी गति हेरे।
(विस्मृत पंक्ति)
चारि सुपारी बिचारि कै देखु तो भेंट को चारि न चाउर मोरे।
("द्वारिका जाइए जी, द्वारिका जाइए जी" आठों पहर तूने यही रट लगा रखी है। यदि मैं तेरा कहना न करूँ तो तुझे बड़ा दुःख होगा किनतु मैं अपनी हालत देख कर कैसे जाऊँ। मेरे पास भेट देने को न तो चार सुपारी हैं, न मुट्ठी भर चावल।)
५। यह सुनि कै तिय हर्ष सों गई एक तिय पास।
पाव सेर चावल लिए आई सहित हुलास।।
(यह सुन कर सुदामा की पत्नी एक (पड़ोसी) महिला से पाव सेर चावल माँग लाई और बड़ी प्रसन्नता से सुदामा को दिए।)

६। सिद्धि कियो गणपति सुमिरि बाँधि दुपटिया खूँट।
माँगत खात चले गए मारग बाली बूँट।।
((सुदामा) सिद्धि मनाकर, गणेश जी का स्मरण कर चावल को दुपट्टे की खूँट पर बाँध कर, रास्ते में बाली, बूँट (हरे चने) माँगते खाते, चले गए।

सीस पगा न झगा तन में प्रभु जानै को आहि बसै केहि ग्रामा।
धोती फटी सी लटी दुपटी अरु पाँव उपानह की नहिं सामा।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एकु रहेउ चकि सो बसुधा अभिरामा।
बूझत दीन दयालु को धाम बतावत आपन नाम सुदामा।
(न सिर पर पगड़ी है, न बदन पर कुर्ता है, न पैरों में जूते हैं। फटी सी धोती पहने है और बदन पर एक दुपट्टा है। प्रभु पता नहीं यह कौन है और किस ग्राम में रहता है। द्वार पर यह दुर्बल ब्राह्मण खड़ा बड़ा चकित होकर आपकी अपार सम्पत्ति को देख रहा है। वह आप दीनदयालु के धाम को पूछ रहा है और अपना नाम सुदामा बताता है।)

बोल्यो द्वारपाल सों सुदामा नाम पाँड़े सुनि छाँड़े राज काज ऐसे जी की गति जानै को।
द्वारिका के नाथ हाथ जोरि धाय गहे पाँव भेंटे लपटाय ऐसी प्रीति अब मानै को।
नैनन बीच जल भरि पूँछत कुशल हरि विप्र बोल्यो विपदा में मोंहि पहिचानै को।

जैसी तुम कीन्हीं तैसी करै को कृपा के सिन्धु ऐसी प्रीति दीनबन्धु दीनन सन मानै को।
(जैसे ही द्वारपाल से सुदामा पांडे नाम सुना, कृष्ण, जिनके मन की गति को कोई नहीं जानता, राज काज छोड़ कर दौड़े और हाथ जोड़ कर सुदामा के पैर पकड़े और लपट के भेंट की। प्रभु जैसी प्रीति मानने वाला कौन है। आँखों में आँसू भर के प्रभु ने सुदामा से कुशल पूछी। सुदामा ने कहा कि, "मुशीबत में मुझे कौन पहचानता है। जैसा व्यवहार आपने किया है, ऐसा कौन करता है। हे दीनबन्धु, ऐसी प्रीति दीनों के साथ कौन मानता है।")

ऐसे बिहाल बिवाँइन सो पग कंटक जाल गड़े पुनि जोये।
हाय महा दुख पायो सखा तुम आये इतै न कितै दिन खोये।
देखि सुदामा की दीनदशा करुणा करि कै करुणानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जल सों पग धोये।
(कृष्ण ने कहा, " आपके पैरों में ऐसी विषम बिवाँइयां हो रही हैं, पैरों में काँटे लगे हैं। हे मित्र, आपने महान दुःख पाये हैं और इतने दिन तक यहाँ न आकर कितना समय खोया है।" सुदामा की दीन दशा को देख कर असीम करुणा से करुणानिधि रो पड़े। परात का पानी तो रखा ही रहा, प्रभु के आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।)